==========

**Phase 9**

# Applied values / applications of Vedic Mathematics values as availed for chase and organization of ancient wisdom

**Phase 9.2**

## Three triple digit numbers ('283', '236' and '519')

*Dr. Sant Kumar Kapoor,*
*Ved Ratan*

==========

***Abstract***

Ganita Sutras text is a composition of 283 letters while Ganita Upsutras text is of 236 letters these together make the text of 519 letters. These three triple digit numbers are of very rich features. These triple digit numbers avail 7 out of 9 numerals of ten place value system. The pair of numerals (4, 7) as such are not being availed by these triple numbers. The Sathapatya of this pair of digits is of 4-space and 7-space respectively. Text of Ganita Sutras and Upsutras specifically avail composition formulations for (0, 1, 2, 7, 9 and 10). The values (3, 4, 5, 6 and 8) being as such not part of the composed text, these that way constitute foundation base of mathematics of Ganita Sutras and Upsutras. This feature singles out (numeral 7) from its absence from the foundation base, as well as from digits being availed by the above mentioned triple number. The Sathapatya of number value 7 is 7-space Hyper Cube 7, hyper cube 7 and D7 (7-space content). Devnagri alphabet is having 5 letters namely (vowel ओ). Varga consonant (ड़, ध and ब), as well as Antstha letter (व) all being of TCV value '7'. Values pair (7, 5) is of the format of 7-space domain, 5-space dimension.

(i) (vowel ओ)

(ii to iv) Varga consonant (ड़, ध and ब),

(v) Antstha letter (व)

Five letters of TCV value 7 respectively are of Sathapatya : (i) TCV (ओ) = 7, 7 dimensional frame (ii) TCV (ड़) = 7, 7-space as base fold of range (3, 4, 5, 6, 7) (iii) TCV (ध) =7, 7-space as origin of 6-space. (iv) TCV (ब) =7, 7-space

as domain fold and (v) TCV (व) =7, 7-space as boundary fold of 8-space. Vedic Ganita Sutras assimilate in its system, the features, values and Sathapatya of 7-space as basis base of applied values of Vedic mathematics for organization of knowledge as scriptures. Srimad Bhagwad Geeta and Sri Durga Sapatsati scriptures are of 700 shalokas each, respectively organized as 18 chapters and 13 chapters. Srimad Bhagwad Geeta is part of bigger scripture: 'Ur Mahabharatm'. Sri Durga Sapatsati is part of Markandeye Puran

==========

## 1
## Pursha Shield
## पुरूष कवच
## Pursha Kavach

Sri Durga Sapatsati scripture shield (Kavach) reaches at the shield (Kavach) for Pursha (man), while being within the domain of Surya / Sun / 6-space domain.

TCV (पुरूष) = 24, parallel with the dimensional frame of six creative dimensions of 6-space.

TCV (कवच) = 13, parallel with 13 versions of Hyper cube 6, being the representative regular bodies of 13 geometries of 6-space.

TCV (पुरूष कवच) = 24+ 13 = 37, parallel with H5 + h5, Sathapatya of 6-space as origin of 5-space.

i. The organization of number value 37 = 13 + 11 + 13, in reverse orientation as -37 = - 13 -11-13 covers the opposite hemisphere set up of 6-space domain

ii. For Pursha to be face to face with 6-space goddess Durga within Brahman domain, transition and transformation is required for which the shield Kavach is needed. This comprehension of ancient wisdom and reach of ancient wisdom at this shield (Kavach) and values of Ganita Sutras and Upsutras being the basis base, brings us face to face with the rich potentialities of Vedic Mathematics.

iii. Formulation (कवच Kavach) is a composition of triple syllables
(I) क of TCV value 2 (ii) व of TCV value 8 (iii) च of TCV value 3

iv. TCV values triple (2, 8, 3) is parallel with triple digits (2, 8, 3) of number value '283' parallel with 283 letters of 16 Ganita Sutras.

v. TCV (दुर्गा / Durga) = 16 and is of Sathapatya D6 (6, 4, 4, 2)

vi. TCV (सिहं / Singh / Lion), Vahan (carrier) of Goddess Durga, is of TCV value 24 = 4 x 6

vii. Creative (4-space) dimension is of Sathapatya of Hyper Cube 4 transiting and transforming and manifesting as Hyper Cube 14 of 29 versions as representative regular bodies of 29 geometries of 14-space.

viii. Transcendental (5-space) domain is enveloped by creative (4-space) boundary.

ix. Transcendental (5-space) is a solid space.

x. With axis transiting and transforming and manifesting as of value '29' makes the solid dimensional frame as of format (29, 29, 29) together of summation value 87.

xi. Sri Durga Saptsati scripture Kavach is a scripture which composes shield / Kavach of 87 manifestations of Goddess Durga.

xii. Here under is the tabulation of these 87 manifestations of 26 shalokas (17 to 42); it will be a very blissful and per fondly rewarding exercise to tabulate as to how Pursha Shareer (Human body organs, bottom to top) is being potentialized by providing shield of 87 manifestations. This and the other connected aspects will be taken up in the next write up. In continuity of the present write up.

**Table -1**

C1 = Serial number, C2 = Shaloka no,
C3 = Goddess, C4 = Syllable wise TCV values of the manifested formulation of Goddess, C5 = summation of the TCV value uptill the manifestation

| C1 | C2 | C3 | | C4 | | C5 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | **i.** ऐन्द्री देवी | 1 | ऐ न्द्री<br>**12+19 = 31** | 31 | 31 |
| 1 | 17 | **ii.** अग्निदेवता देवी | 2 | अ ग्नि दे व ता<br>**1+13+6+7+6=33** | 33 | 64 |
| | | **i.** वाराही देवी | 3 | वा रा ही<br>**9+5+13 = 27** | 27 | 91 |
| | | **ii.** खड्गधारिणी देवी | 4 | ख ड्ग धा रि णी<br>**3+9 +9+5+11 =37** | 37 | 128 |
| | | **iii.** वारूणी देवी | 5 | वा रू णी<br>**9 + 9 +11 = 29** | 29 | 157 |
| | | **iv.** मृगवाहिनी देवी | 6 | मृ ग वा हि नी<br>**13+4+9+11+12= 49** | 49 | 206 |
| 2 | 18 | | | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 19 | i. कौमारी देवी | 7 | कौ मा री<br>10+11+7=28 | 28 | 234 |
| | | ii. शूलधारिणी देवी | 8 | शू ल धा रि णी<br>8+6+9+5+11= 39 | 39 | 273 |
| | | iii. ब्रह्माणि देवी | 9 | ब्र ह्मा णि<br>9 +19+9 =37 | 37 | 310 |
| | | iv. वैष्णवी देवी | 10 | वै ष्ण वी<br>15+14+11 = 40 | 40 | 350 |
| 4 | 20 | i. चामुण्डा देवी | 11 | चा मु ण्डा<br>4+12+14 = 30 | 30 | 380 |
| | | ii. जया देवी | 12 | ज या<br>5+3 = 8 | 8 | 388 |
| | | iii. विजया देवी | 13 | वि ज या<br>9 + 5+ 3 = 17 | 17 | 405 |
| 5 | 21 | i. अजिता देवी | 14 | अ जि ता<br>1 + 6 + 6 = 13 | 13 | 418 |
| | | ii. शिखामुद्योतिनी देवी | 15 | शि खा मु द्यो ति नी<br>4+4 +12+14+6+12=52 | 52 | 470 |
| | | iii. अपराजिता देवी | 16 | अ प रा जि ता<br>1+6+5+6+6 = 24 | 24 | 494 |
| 6 | 22 | i. मालाधरी देवी | 17 | मा ला ध री<br>11+7+6+7=31 | 31 | 525 |
| | | ii. यशस्विनी देवी | 18 | य श स्वि नी<br>2+3+12+12 = 29 | 29 | 554 |
| | | iii. त्रिनेत्रा देवी | 19 | त्रि ने त्रा<br>7+14+7 = 28 | 28 | 582 |
| | | iv. यमघण्टा देवी | 20 | य म घ ण्टा<br>2+10+8+12=32 | 32 | 614 |
| 7 | 23 | i. शङ्खिनी देवी | 21 | श ङ्ख नी<br>3+9+12=24 | 24 | 638 |
| | | ii. श्रोत्रयोद्वारवासिनी देवी | 22 | श्रो त्र यो द्वा र वा सि नी<br>10+6+8+15+4+9+5+12= 69 | 69 | 707 |
| | | iii. कालिका देवी | 23 | का लि का<br>3+5+3 = 11 | 11 | 718 |
| | | iv. शांकरी देवी | 24 | शां क री<br>13+2+7=22 | 22 | 740 |
| 8 | 24 | i. सुगन्धा देवी | 25 | सु ग न्धा<br>6+4+17=27 | 27 | 767 |
| | | ii. चर्चिका देवी | 26 | च र्चि का<br>3+6+3=12 | 12 | 779 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | iii. चामृतकला देवी | 27 | चा मृ त क ला<br>4+13+5+2+7=31 | 31 | 810 |
| | | iv. सरसवती देवी | 28 | स र स व ती<br>4+4+4+8+8=28 | 28 | 838 |
| | | i. कौमारी देवी | 29 | कौ मा री<br>10+11+7=28 | 28 | 866 |
| | | ii. चण्डिका देवी | 30 | च ण्डि का<br>3+14+3=20 | 20 | 886 |
| | | iii. चित्रघण्टा देवी | 31 | चि त्र घ ण्टा<br>4+6 +5+11=26 | 26 | 912 |
| 9 | 25 | iv. महामाया देवी | 32 | म हा मा या<br>10+11+11+3=35 | 35 | 947 |
| | | i. कामाक्षी देवी | 33 | का मा क्षी<br>3+11+11=25 | 25 | 972 |
| | | ii. सर्वमङ्गला देवी | 34 | स र्व म ङ्ग ला<br>4+10+10+9+7=40 | 40 | 1012 |
| | | iii. भद्रकाली देवी | 35 | भ द्र का ली<br>9 +8+3+9=29 | 29 | 1041 |
| 10 | 26 | iv. धनुर्धरी देवी | 36 | ध नु र्ध री<br>8+11+10+7=35 | 35 | 1076 |
| | | i. नीलग्रीवा देवी | 37 | नी ल ग्री वा<br>12+6+8+9 = 35 | 35 | 1111 |
| | | ii. नलकूबरी देवी | 38 | न ल कू ब री<br>9+6+7+8+7= 37 | 37 | 1148 |
| | | iii. खड्गिनी देवी | 39 | ख ड्गि नी<br>3+10+12=25 | 25 | 1173 |
| 11 | 27 | iv. वज्रधारिणी देवी | 40 | व ज्र धा रि णी<br>8+5+9+5+11=38 | 38 | 1211 |
| | | i. दण्डिनी देवी | 41 | द ण्डि नी<br>7+14+12=33 | 33 | 1244 |
| | | ii. अम्बिका देवी | 42 | अ म्बि का<br>1+18+3 = 22 | 22 | 1266 |
| | | iii. शूलेश्वरी देवी | 43 | शू ले श्व री<br>8 +11+10+7=36 | 36 | 1302 |
| 12 | 28 | iv. कूलेश्वरी देवी | 44 | कू ले श्व री<br>7+11+9+7=33 | 33 | 1335 |
| | | i. महादेवी देवी | 45 | म हा दे वी<br>10+11+12+11=44 | 44 | 1379 |
| 13 | 29 | ii. शोकविनाशिनी देवी | 46 | शो क वि ना शि नी<br>9+2+9+10+4+12=46 | 46 | 1425 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | iii. ललिता देवी | 47 | ल लि ता<br>6+7+6 = 20 | 20 | 1445 |
| | | iv. शूलधारिणी देवी | 48 | शू ल धा रि णी<br>8+6+9+5+11=39 | 39 | 1484 |
| | | i. कामिनी देवी | 49 | का मि नी<br>3+11+12= 26 | 26 | 1510 |
| | | ii. गुह्येश्वरी देवी | 50 | गु ह्ये श्व री<br>6+17+9+7=39 | 39 | 1549 |
| | | iii. पूतना देवी | 51 | पू त ना<br>11+5+10=26 | 26 | 1575 |
| | | iv. कामिका देवी | 52 | का मि का<br>3+11+3=17 | 17 | 1592 |
| 14 | 30 | v. महिषवाहिनी देवी | 53 | म हि ष वा हि नी<br>10+11+6+9+11+12=59 | 59 | 1651 |
| | | i. भगवती देवी | 54 | भ ग व ती<br>9+4+8+8=29 | 29 | 1680 |
| | | ii. विन्ध्यवासिनी देवी | 55 | वि न्ध्य वा सि नी<br>9+17+9+5+12=52 | 52 | 1732 |
| 15 | 31 | iii. महाबला देवी | 56 | म हा ब ला<br>10+11+8+7=36 | 36 | 1768 |
| | | i. नारसिंही देवी | 57 | नॉ र सिं ही<br>12+4+14+13=43 | 43 | 1811 |
| | | ii. तैजसी देवी | 58 | तै ज सी<br>12+5+7=24 | 24 | 1835 |
| | | iii. श्री देवी | 59 | श्री<br>7 | 7 | 1842 |
| 16 | 32 | iv. तलवासिनी देवी | 60 | त ल वा सि नी<br>5+6+9+5+12=37 | 37 | 1879 |
| | | i. दंष्ट्राकराली देवी | 61 | दं ष्ट्रा क रा ली<br>16+15+2+5+9= 47 | 47 | 1926 |
| | | ii. ऊर्ध्वकेशिनी देवी | 62 | ऊ र्ध्व के शि नी<br>6+16+7+4+12=45 | 45 | 1971 |
| | | iii. कौबेरी देवी | 63 | कौ बे री<br>10+13+7=30 | 30 | 2001 |
| 17 | 33 | iv. वागीश्वरी देवी | 64 | वा गी श्व री<br>9+7+9+7=32 | 32 | 2033 |
| | | i. पार्वती देवी | 65 | पा र्व ती<br>7+10+8=25 | 25 | 2058 |
| | | ii. कालरात्रि देवी | 66 | का ल रा त्रि<br>3+6+5+7=21 | 21 | 2079 |
| 18 | 34 | | | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | **iii.** मुकुटेश्वरी देवी | 67 | मु कु टे श्व री<br>**12+4+9+11+7=46** | 46 | 2125 |
| 19 | 35 | **i.** पदमावती देवी | 68 | प द मा व ती<br>**6+7+11+8+8=40** | 40 | 2165 |
| | | **ii.** चूडामणि देवी | 69 | चू डा म णि<br>**8+7+9+9=33** | 33 | 2198 |
| | | **iii.** ज्वालामुखी देवी | 70 | ज्वा ला मु खी<br>**13+7+12+6=38** | 38 | 2236 |
| | | **iv.** अभेद्या देवी | 71 | अ भे द्या<br>**1+15+9=25** | 25 | 2261 |
| 20 | 36 | i. ब्रह्माणि देवी | 72 | ब्र ह्मा णि<br>**9+19+9= 37** | 37 | 2298 |
| | | ii. छत्रेश्वरी देवी | 73 | छ त्रे श्व री<br>**3+11+9+7=30** | 30 | 2328 |
| | | iii. धर्मधारिणी देवी | 74 | ध र्म धा रि णी<br>**8+12+9+5+11=45** | 45 | 2373 |
| 21 | 37 | i. व्रजहस्ता देवी | 75 | व्र ज ह स्ता<br>**9+5+10+9 = 33** | 33 | 2406 |
| | | ii. कल्याणशोभना देवी | 76 | क ल्या ण शो भ ना<br>**2+8+8+9+9+10 =46** | 46 | 2452 |
| 22 | 38 | i. योगिनी देवी | 77 | यो गि नी<br>**8+5+12=25** | 25 | 2477 |
| | | ii. नारायणी देवी | 78 | ना रा य णी<br>**10+5+2+11 = 28** | 28 | 2505 |
| 23 | 39 | i. वाराही देवी | 79 | वा रा ही<br>**9+5+13 = 27** | 27 | 2532 |
| | | ii. वैष्णवी देवी | 80 | वै ष्ण वी<br>**15+14 +11 =30** | 30 | 2562 |
| | | iii. चक्रिणी देवी | 81 | च क्रि णी<br>**3+4+11=18** | 18 | 2580 |
| 24 | 40 | i. इन्द्रणि देवी | 82 | इ न्द्र णि<br>**2+16+11=29** | 29 | 2609 |
| | | ii. चण्डिका देवी | 83 | च ण्डि का<br>**3+14+3=20** | 20 | 2629 |
| | | iii. महालक्ष्मी देवी | 84 | म हा ल क्ष्मी<br>**10+11+6+20= 47** | 47 | 2676 |
| | | iv. भैरवी देवी | 85 | भै र वी<br>**16+4+11=31** | 31 | 2707 |
| 25 | 41 | i. महालक्ष्मी देवी | 86 | म हा ल क्ष्मी<br>**10+11+6+20= 47** | 47 | 2754 |
| 26 | 42 | i. देवि देवी | 87 | दे वि<br>**12+9=21** | 21 | 2775 |

## 2
## Text of Divya Kvacham

Original Text of Divya Kavacham is being reproduced hereunder. One may take help of English transliteration and translation of the text for exploration and reach of ancient wisdom.

# अथ देव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

*मार्कण्डेय उवाच*

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥ १॥

*ब्रह्मोवाच*

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने॥ २॥

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥ ३॥

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥ ४॥

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥ ५॥

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥ ६॥

न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥ ७ ॥
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥ ८ ॥
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना॥ ९ ॥
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥ १० ॥
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता॥ ११ ॥
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥ १२ ॥
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥ १३ ॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥ १४ ॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥ १५ ॥
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥ १६ ॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥ १७ ॥
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥ १८ ॥

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा॥ १९॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥ २०॥
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥ २१॥
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥ २२॥
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी॥ २३॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती॥ २४॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके॥ २५॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥ २६॥
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी॥ २७॥
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी॥ २८॥
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी॥ २९॥
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी॥ ३०॥

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी॥ ३१॥
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी॥ ३२॥
नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा॥ ३३॥
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी॥ ३४॥
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु॥ ३५॥
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी॥ ३६॥
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना॥ ३७॥
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा॥ ३८॥
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी॥ ३९॥
गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी॥ ४०॥
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता॥ ४१॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी॥ ४२॥

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति॥ ४३॥
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्॥ ४४॥
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्॥ ४५॥
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥ ४६॥
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः॥ ४७॥
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्॥ ४८॥
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः॥ ४९॥
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः॥ ५०॥
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः॥ ५१॥
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्॥ ५२॥

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा॥ ५३ ॥

यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी॥ ५४॥

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः॥ ५५ ॥

लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते॥ ॐ॥ ५६ ॥

*इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम्।*

## 3
## विघां च चक्रिणी
## Vidya by chakrini

1. 'Chakrini' is one of 87 manifestations of Goddess being availed as the basis base value of Shield. Shaloka 39 of these scripture preserves that this manifestation of Goddess covers, protects and unfolds Vidya (विघा /Vidya/ Wisdom to reach at knowledge).
2. Formulation (चक्रिणी) is a composition of three syllables of TCV values triple (4, 3, 11) of summation value 18 parallel with TCV (विघा). The cyclic unfolding of formulation (चक्रिणी) is being tabulated hereunder:

Table -2
Formulation चक्रिणी Chakrini
C1 = Serial number, C2 = Fold Value,
C3 = Value uptill the fold

Table A

Part 1

| C1 | C2 | | | C3 |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 4 | 3 | 11 | 18 |
| 2 | 1 | 8 | 7 | 16 |
| 3 | 7 | 1 | 6 | 14 |
| 4 | 6 | 5 | 1 | 12 |
| 5 | 1 | 4 | 5 | 10 |
| 6 | 3 | 1 | 4 | 8 |
| 7 | 2 | 3 | 1 | 6 |
| 8 | 1 | 2 | 1 | 4 |
| **9** | **1** | **1** | **0** | 2 |

Part 2

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 10 | 0 | 1 | 1 | 2 |
| 11 | 1 | 0 | 1 | 2 |
| **12** | **1** | **1** | **0** | 2 |

Table B

Part 1

| C1 | C2 | | | C3 |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 4 | 3 | 11 | 18 |
| 2 | 1 | 8 | 7 | 16 |
| 3 | 7 | 1 | 6 | 14 |
| 4 | 6 | 5 | 1 | 12 |
| 5 | 1 | 4 | 5 | 10 |
| 6 | 3 | 1 | 4 | 8 |
| 7 | 2 | 3 | 1 | 6 |
| 8 | 1 | 2 | 1 | 4 |

Part 2

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **9** | **1** | **1** | **0** | 2 |
| 10 | 0 | 1 | 1 | 2 |
| 11 | 1 | 0 | 1 | 2 |
| **12** | **1** | **1** | **0** | 2 |

3. First eight cyclic phases are the basis base phases, followed by 4 cyclic phases as of recycling frequency.
4. First eight phases are of sequential values (18, 16, 14, 12, 10, 8, 6, 4) and subsequent four phases are of values (2, 2, 2, 2).
5. Values (18, 16, 14, 12, 10, 8, 6, 4, 2) are parallel with the boundary components, respectively of Hyper cubes 9, 8, 7, 6, 5, 4, 3, 2. As of sequential application of Ganita Sutra 13 (सोपान्त्यद्वयमन्तम्).
6. Values quadruple (2, 2, 2, 2) is of Sathapatya of quadruple spatial dimensions of creator (4-space).

## 4
## पुरूष Pursha / 6-space human frame

1. Formulation 'पुरूष Pursha / 6-space human frame' is of TCV (पुरूष) = 24 = 4 x 6, parallel with creative dimensional frame of 6 dimensions.
2. पुरूष Pursha / 6-space human frame on its transition for self referral (6-space) order, it requires 'कवच Kavach/ Shield'.
3. The formulation 'कवच Kavach/ Shield' is a composition of triple syllables (i) 'क', TCV (क) = 2, (ii) 'व', TCV (व) = 8 and (iii) 'च', TCV (च) = 3.
4. Triple (2, 8, 3) when formatted along ten place value system it becomes a number value '283', parallel with the total letters of text of 16 Ganita Sutras.
5. Number value 16 is parallel with four folds spectra of D6 (6, 4, 4, 2).
6. Numbers range 1 to 16 gives rise to 29 factors.
7. Value 29 with its composition as 16 + 13 is firstly parallel with the organization set up of 13 Upsutras of 16 Sutras.
8. The triple digit number (283) is of summation value of its triple digits 2 + 8 + 3 = 13.
9. Number value 13 is parallel with 13 versions of Hyper Cube 6 being the Sathapatya of 13 geometries of 6-space.
10. Value 13 is of middle placement of triple (15, 13, 11).
11. Triple (15, 13, 11) is parallel with the summation values triple of triple three digit numbers 519, 283 and 236.
    i. Triple digit numbers 519 gives rise to summation value for its triple digits (5, 1, 9) being 5 + 1 + 9 = 15.

ii. Triple digit numbers 283 gives rise to summation value for its triple digits (2, 8, 3) being 2 + 8 + 3 = 13.

iii. Triple digit numbers 236 gives rise to summation value for its triple digits (2, 3, 6) being 2 + 3 + 6 = 11.

12. Hyper cube 4, a four space body is of four folds (2, 3, 4, 5) of folds summation value 2 + 3 + 4 + 5 =14.

13. Values pairs (6, 4) (i) 6, 4 and (ii) (16, 14) are of the format of (Domain, Dimension)

14. Number value 29 is parallel with 29 versions of Hyper cube 14 Sathapatya of 29 geometries of 14 space.

15. D-16 is of four fold spectra (16, 14, 14, 12) of summation value 16 + 14 + 14 + 12 = 56 parallel with Sathapatya of दिव्याः कवचम् Divya Kavacham, 'Goddess Durga' Shield.

## 5
## Organization of Sathapatya of दिव्याः कवचम् Divya Kavacham, 'Goddess Durga' Shield

1. This scripture is a composition of 56 shalokas. First 16 Shalokas are about the need of Kavach / Shield for Pursha for its potentialize and being of the format for transition and transformation to be of the order of the Goddess Durga transcendental goddess of self referral origin, creative dimensional order and spatial dimension of dimension order. Human body is a setup of

   (i) स्थूल Sathule / Mundane state
   (ii) सूक्ष्म Suksham / Subtle state
   (iii) कारण Karan / Casual state

   Transition from Mundane state to Subtle state is a transition from Domain fold to dimension fold. And transition from subtle state to Casual state is a transition from dimensional state to dimension of dimensional state. This attainment is the attainment of transition

   from 6 x 4 = 24 of spectra of D-8 (8, 6, 6, 4)
   to 6 x 4 x 2 = 48 of spectra of D-14 (14, 12, 12, 10)

   Last 14 Shalokas of दिव्याः कवचम् Divya Kavacham, 'Goddess Durga' Shield are of potentialized Pursha being with Divya Kavacham.

   26 Shalokas, from shaloka 17 to shaloka 42 are as to the form in which Divya Kavacham potentializes Pursha of the format of as to the folds of Hyper Cube 7 of summation value '26'.

# 6
# Transition from Creative (4-space) order to Transcendental (5-space) order

1. Creative (4-space) order

   A. Creative order creates transcendental (five fold) range (4, 5, 6, 7, 8) of respective fold wise Sathapatya :

      a. 4-space as dimension fold
      b. 5-space as boundary fold
      c. 6-space as domain fold
      d. 7-space as origin fold, and
      e. 8-space as base fold

   B. Fourth Vargas consonants (त, थ, द, ध, न) row constitutes Sathapatya of Creative order five fold range :

      a. Letter (त) is of TCV value '4' and is of Sathapatya of creative order / 4-space as dimension fold
      b. Letter (थ) is of TCV value '5' and is of Sathapatya of 4-space as boundary fold of 5-space
      c. Letter (द) is of TCV value '6' and is of Sathapatya of domain fold
      d. Letter (ध) is of TCV value '7' and is of Sathapatya of origin fold, and
      e. Letter (न) is of TCV value '8' and is of Sathapatya of base fold

   Transcendental (5-space) order

   A. Creative order creates transcendental (five fold) range (5, 6, 7, 8, 9) of respective fold wise Sathapatya :

      a. 5-space as dimension fold
      b. 6-space as boundary fold
      f. 7-space as domain fold
      g. 8-space as origin fold, and
      h. 9-space as base fold

B. Fifth Vargas consonants (प, फ, ब, भ, म) row constitutes Sathapatya of Transcendental order five fold range :

a. Letter (प) is of TCV value '5' and is of Sathapatya of transcendental order / 5-space as dimension fold
b. Letter (फ) is of TCV value '6' and is of Sathapatya of 6-space as boundary fold of 7-space
c. Letter (ब) is of TCV value '7' and is of Sathapatya of 7-space domain fold
d. Letter (भ) is of TCV value '8' and is of Sathapatya of origin fold, and
e. Letter (म) is of TCV value '9' and is of Sathapatya of base fold

**Manifestation of creative order creation of five folds**

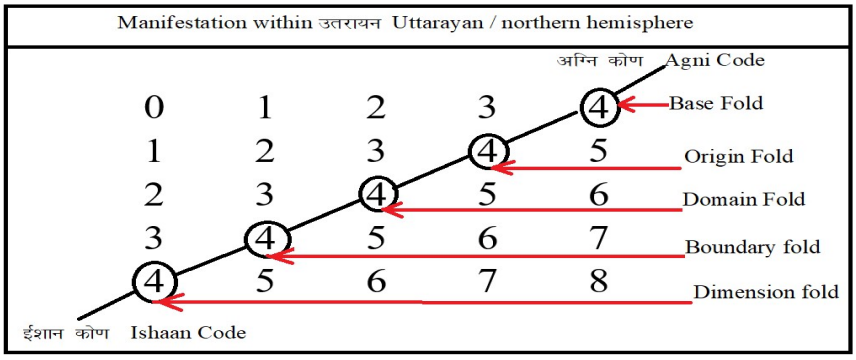


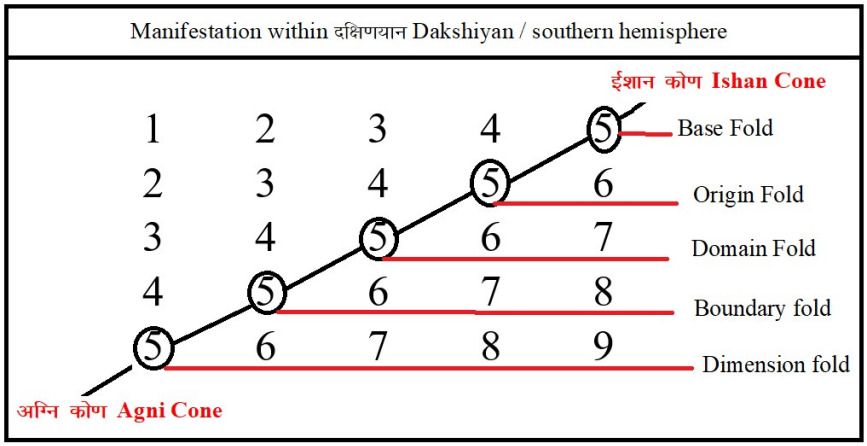

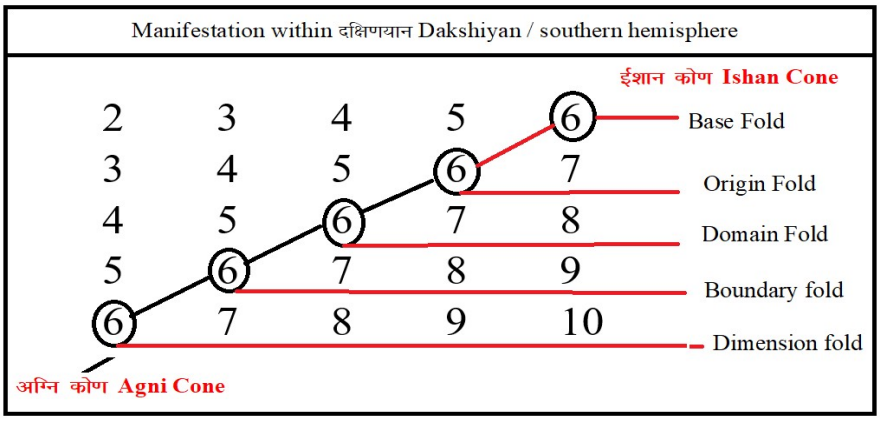
Manifestation within दक्षिणयान Dakshiyan / southern hemisphere
ईशान कोण Ishan Cone
2 3 4 5 6
3 4 5 6 7
4 5 6 7 8
5 6 7 8 9
6 7 8 9 10
Base Fold
Origin Fold
Domain Fold
Boundary fold
Dimension fold
अग्नि कोण Agni Cone

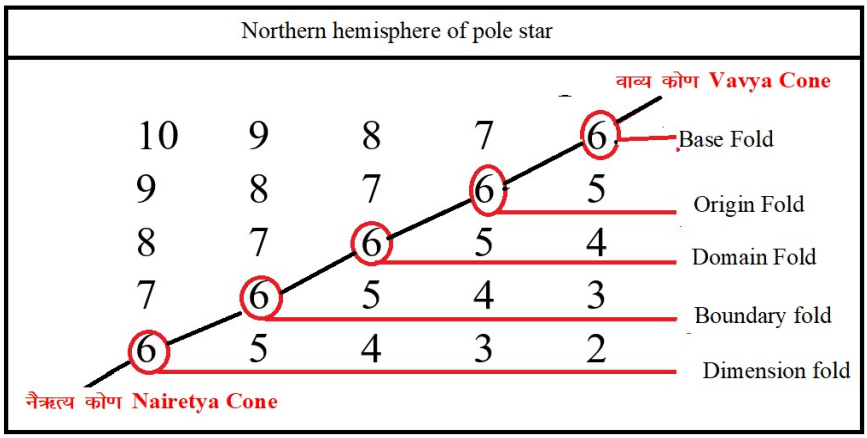
Northern hemisphere of pole star
वाव्य कोण Vavya Cone
10 9 8 7 6
9 8 7 6 5
8 7 6 5 4
7 6 5 4 3
6 5 4 3 2
Base Fold
Origin Fold
Domain Fold
Boundary fold
Dimension fold
नैऋत्य कोण Nairetya Cone

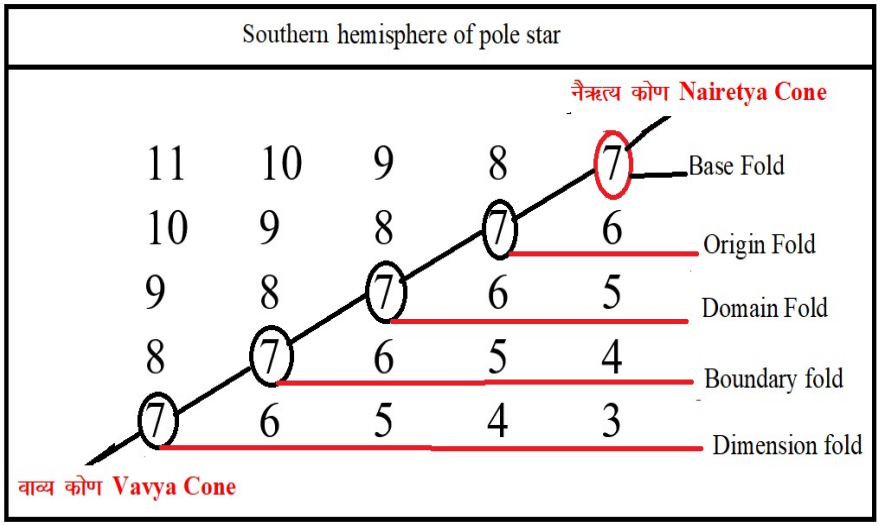
Southern hemisphere of pole star
नैऋत्य कोण Nairetya Cone
11 10 9 8 7
10 9 8 7 6
9 8 7 6 5
8 7 6 5 4
7 6 5 4 3
Base Fold
Origin Fold
Domain Fold
Boundary fold
Dimension fold
वाव्य कोण Vavya Cone

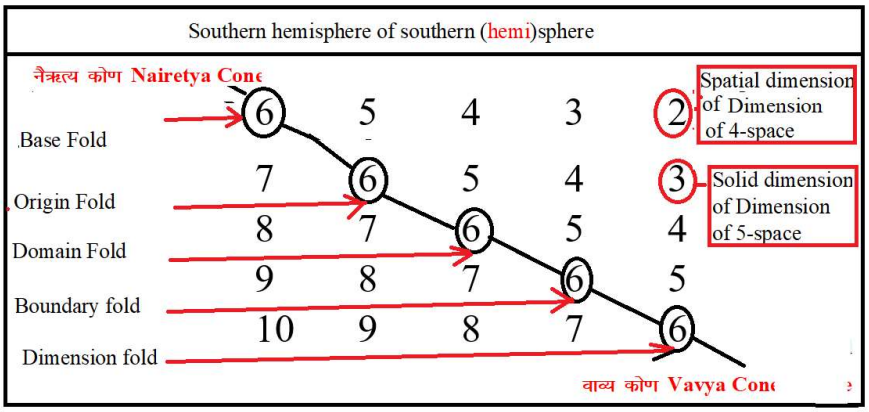


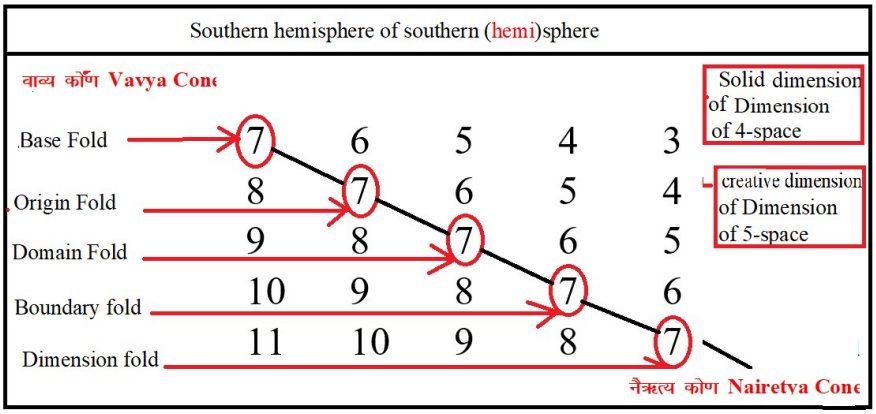


**Exploration in continuity to be about**

**Transition from Creative order to Transcendental Order**

i. Transition from northern hemisphere to southern hemisphere of Surya / Sun / 6-space domain, results into transition from Creative order to Transcendental order.

ii. Seven space of transcendental order / ध्रुव / Dhruv / Pole Star is origin of 6-space of creative order.

iii. Eight space (अष्ट प्रकृति / Asht Prakrati / Eight fold Nature ) of self referral (6-space) order is origin of 7-space of transcendental (5-space) order

Write up is the first part, to be followed by the second part.

Dr. S. K. Kapoor
February 2, 2025